# सफलता की कहानी कृषक की जुबानी

**नाम कृषक– वीरेन्द्र सिंह**
**पिता का नाम– श्री मुरली सिंह**
**गॉव– वस्याणी, पोस्ट– लैसडाउन**
**विकासखण्ड– दुगड्डा,**
**जिला– कोटद्वार गढ़वाल**

बहुत ही प्रसन्नता हुई कि मुझे औद्यानिक विकास की सफलता की कहानी लिखने का अवसर मिला। उद्यान विभाग के कार्यक्रम कियान्वयन से पूर्व में गेहूँ, दाल उत्पादन तक ही सीमित था, जिसमें केवल केवल जीविका मात्र ही आय प्राप्त होती थी। जीवन स्तर भी अच्छा नहीं था, न ही समाज में कोई पहचान थी। मैं लगभग वर्ष 2004–05 में उद्यान विभाग के सम्पर्क में आया और औद्यानिक विकास से जुड़ गया। वर्ष 2005–06 में हार्टिकल्चर टैक्नालाजी मिशन अन्तर्गत 0.50 हैक्टर में आम उद्यान की स्थापना मेरे द्वारा की गई। वर्तमान में उद्यान से लगभग ₹20–25 हजार की आय में वृद्धि हुई, साथ ही उद्यान में विभागीय/हार्टिकल्चर टैक्नालाजी मिशन अन्तर्गत राजसहायता से सब्जी की अन्तः फसल कर सब्जी उत्पादन से लगभग वर्ष में ₹35–40 हजार आय प्राप्त हो रही है। उद्यान में वर्मी कम्पोस्ट पिट भी बनाया गया, जिससे वर्मी कम्पोस्ट पिट भी बनाया गया, जिसमें वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार कर खेतों में प्रयोग किया जा रहा है। इससे भूमि की उर्वरता में सुधार एवं उत्पादन में वृद्धि हुई है। फलों एवं सब्जियों की ग्रेडिंग/पैकिंग हेतु एक ओ0एफ0एच0यू0 की स्थापना की गई, जिससे काफी सुविधा मिल गई। उद्यान विभाग द्वारा एक सामुदायिक सिंचाई टैंक का निर्माण कराया गया, जिससे उद्यान की पर्याप्त सिंचाई होने से औद्यानिक फसल का अपेक्षित उत्पादन प्राप्त हो रहा है।

मेरे द्वारा अपने ग्राम बस्याणी के कृषकों को प्रेरित कर उद्यान विभाग/ग्राम्य विकास विभाग के सहयोग से गांव में सामुदायिक उद्यान लगभग 7–8 हैक्टर की स्थापना कराई। वर्तमान में पौधें फलत में और समस्त कृषक फल/सब्जी बिक्री कर अच्छा लाभ ले रहे है।

**वीरेन्द्र सिंह पुत्र श्री मुरली सिंह**
**गॉव–बस्याणी, पोस्ट–लैसडाउन**
**विकासखण्ड–दुगड्डा,**
**कोटद्वार–गढ़वाल**